क्या अच्छा दिन है?

सरोज यादव*

भारतीय समाज में सदियों से स्त्री-पुरुष एवं बालक-बालिकाओं में भेदभाव किया जाता रहा है। संवैधानिक समानता के बावजूद यह भेदभाव आज भी जारी है जो बच्चों के जन्म, उनकी देखभाल के तरीके, शिक्षा, रीति-रिवाज़ व रोजगार के अवसर आदि में परिलक्षित होता है। सरकारी एवं गैर-सरकारी संगठनों द्वारा किए गए प्रयासों के परिणाम स्वरूप स्त्री-पुरुष समानता के प्रति लोगों की सोच में धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है और आज लोग बालिकाओं की शिक्षा के प्रति सजग हो रहे हैं। संवाद के रूप में लिखा गया यह लेख भारतीय परिवारों में बालिकाओं के प्रति बदलती सोच की एक झलक प्रस्तुत करता है।

मैं अपने घर में सबसे बड़ी हूँ। मेरी एक छोटी-सी बहन है। हमारे घर में नन्हा-सा भाई हुआ है। घर में थाली बजाई जा रही है। काश कि मेरे माता पिता हमारे जन्म पर भी इतनी ही खुशी मनाते जितनी कि मेरे भाई के जन्म पर मना रहे हैं। मैं एक कोने में बैठी सोच रही थी कि बेटी पैदा हो जाने पर ऐसा क्या हो जाता है जो सारे घर में खामोशी छा जाती है। यही नहीं बेटी पैदा करने वाली उस माँ को खाने-पीने को भी कम दिया जाता है जबकि बेटा पैदा करने वाली माँ की खूब खातिर होती है। मेरा भाई बड़ा होने लगा, हम दोनों खेलने लगे। देखते-ही-देखते मेरा भाई जो मेरे से छोटा था उसे स्कूल में डाल दिया। मैं सोचने लगी, उसके लिए नया बस्ता, नई किताबें, नए जूते, नयी स्कूल ड्रेस भी आ गई। मेरी माँ उन सबको देख कर फूली नहीं समा रही थी। स्कूल जाने के पहले दिन जैसे ही मेरा भाई तैयार हुआ तो मेरी दादी व मेरे पिताजी के मुँह से निकला, क्या सुन्दर लग रहा है। हमारा बेटा बड़ा होकर एक दिन ज़रूर अफ़सर बनेगा।

*प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, डी.ई.एस.एस., एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

तभी माँ ने आवाज़ लगाई, नीलम भाई को दही व चीनी खिला। पहले दिन स्कूल जा रहा है। मैं दौड़कर दही व चीनी लेने चली गई। मैं कुछ देर के लिए भूल गई थी कि स्कूल में मैं नहीं मेरा छोटा भाई जा रहा है। मेरा छोटा भाई अमन दही खाने लगा। मैं कभी उसकी कमीज़ को हाथ लगाकर देखूँ, कभी उसके बस्ते को अपनी पीठ पर लगा कर देखूँ। तभी रिक्शे की घंटी बज गई और अमन दौड़कर रिक्शे में बैठ गया। मेरा सारा दिन उत्साह में बीत गया और मैं इंतज़ार करने लगी अमन के स्कूल से आने का। जैसे ही मेरा भाई स्कूल से दोपहर में आया, माँ रसोईघर में उसके लिए खाना बनाने चली गई व एक थाल में ताज़ी दही व चपाती रखकर ले आई। मैंने माँ से कहा मेरा खाना कहाँ है। मैंने तो सुबह से कुछ नहीं खाया और तुमने मुझसे पूछा भी नहीं कि खाना खाया या नहीं। माँ ने मुझे कहा कि तू तो घर में ही थी खाने को किसी ने मना किया था। जा रसोई में से लेकर खा ले। रसोई में सुबह की बनी रोटी व छाछ रखी हुई थी मैंने पूछा सब्ज़ी तो है नहीं। उस पर दादी माँ ने कहा "सब्ज़ी तो तेरे पिताजी व भाई को दे दी। खा ले छाछ के साथ कौन-सा तूने हल चलाना है या नौकरी करनी है। लड़कियों को ज़्यादा चटोरा नहीं होना चाहिए जो बचा-खुचा मिल जाए खा लेना चाहिए।" मैं दो रोटी और छाछ का गिलास लेकर आंगन में चारपाई पर बैठकर खाने लगी। मुझे दुख इस बात का नहीं था कि मुझे सब्ज़ी नहीं मिली, मुझे दुख इस बात का था कि लड़कियों के साथ ऐसा क्यों होता है? कभी यह कहकर कि लड़की पराया धन है कभी यह कहकर कि अच्छा खाएगी तो जल्दी बड़ी हो जाएगी, जल्दी शादी करनी पड़ेगी और कभी लोगों की नज़र में ना आए। बहुत बार आधे पेट या रूखा भोजन ही नसीब होता है।

अमन दूसरी कक्षा में हो गया, मैं उसकी किताबों को देखती और मन-ही-मन सोचती कि काश मेरी माँ व पिताजी मेरी भावनाओं को समझते और मुझे भी स्कूल जाने देते। मैंने बहुत बार अपने पिताजी से स्कूल जाने की ज़िद की लेकिन हमेशा की तरह एक ही जवाब दे देते "लड़कियों का काम घर-गृहस्थी को संभालना है। तुम अपनी माँ के साथ घर के कामों में हाथ बटाओ, कुछ काम सीखो, नहीं तो ब्याह के बाद हमें ही उलाहना मिलेगा कि तुम्हारे माँ-बाप ने कुछ सिखाया था या नहीं।"

मैं सुबह से शाम तक छोटे बहन-भाईयों की देख-रेख व माँ के साथ घर, खेत का काम करते-करते बड़ी होने लगी। एक दिन मेरे मामा मामी गर्मियों में हमारे घर आए। उनके साथ उनकी दोनों लड़कियाँ भी थीं। बहुत दिनों के बाद हमारे घर आए थे। मैं तो उनको याद के हिसाब से पहली बार देख रही थी। सबसे ज़्यादा खुश मैं ही थी क्योंकि मुझे हमउम्र सहेलियाँ मिल गईं। माँ भी कई बार नीना जो कि मामा की बड़ी लड़की थी उसके बारे में बातें करती थीं।

एक दिन नीना अपनी किताब से मुझे ज़ोर-ज़ोर से एक कहानी सुना रही थी और मैं मूक बनी

उस कहानी में खोई हुई थी। नीना की छोटी बहन चुन्नू व मेरा भाई अमन भी बैठा था हम सब कहानी सुनने में इतने लीन थे कि पता ही नहीं चला कि माँ कब से वहाँ खड़ी थी। यह तो मामी ने जब माँ के कंधे पर हाथ रखा तब माँ चौंकी व हम सब भी उधर देखने लग गए।

"क्या देख रही थी दीदी" रमा मामी ने कहा "मैं देख रही थी कि तुम्हारी दोनों लड़कियाँ हैं और लड़कियों को पढ़ा भी रही हो" माँ ने कहा।

"रमा, क्या तुम्हें पुत्र की कमी नहीं खलती। परिवार में कम-से-कम एक पुत्र तो होना ही चाहिए। पुत्र के बिना स्वर्ग में भी स्थान नहीं मिलता। पुत्र ही बुढ़ापे में माँ-बाप का सहारा होता है। अब तो सुना है डॉक्टर पेट में ही बता देते हैं कि होने वाला बच्चा लड़का है या लड़की" माँ ने कहा। "अरे दीदी, यह तो सरासर पाप है। मुझे भी छोटी के समय माताजी व पड़ोस की ताई ने बहुत कहा। यहाँ तक की ताने मारने भी शुरू कर दिए। वंश चलाने की दुहाई देने लगे। पर मैं और आपके भाई विचलित नहीं हुए। आज समय बहुत बदल गया है। लड़कियाँ लड़कों से आगे निकल रही हैं। मैं ऐसे बहुत से परिवारों को जानती हूँ जहाँ लड़कियाँ पढ़-लिख कर अपने पैरों पर खड़ी हैं। अपने बूढ़े, माँ-बाप की देखभाल लड़कों के साथ रह रहे माँ-बाप से अच्छी तरह कर रही हैं।"

"हम अंधविश्वासों से घिरे रहते हैं लड़कियों को पराया धन समझकर ना पढ़ाते हैं ना अच्छा खाना खिलाते हैं। एक और अपराध जो लाखों बच्चों और खासतौर से लड़कियों के साथ किया जाता है वो है कम उम्र में शादी। जल्दी माँ बन जाती हैं। वो भी कई बच्चों की माँ। कई बच्चे तो जन्म के समय या जन्म के बाद मर जाते हैं और कई बार लड़के की चाह में गिरा दिए जाते हैं, विशेषकर लड़कियाँ। जल्दी-जल्दी बच्चे होने से ये लड़कियाँ कम उम्र में बीमारियों, परेशानियों व लाचारियों के दुष्चक्र में जिन्दगी भर पिसकर रह जाती हैं।" मामी एक ही साँस में इतना सब कुछ कह गईं। और माँ मामी की तरफ़ देखते-देखते पता नहीं कहाँ खो गई। माँ को एक-एक शब्द लग रहा था कि जैसे उसकी अपनी बीती सुना रही हैं।

आप सोचो कल को जब अमन पढ़-लिखकर बड़ा अफ़सर बनेगा तो वह चाहेगा कि उसकी होने वाली पत्नी भी पढ़ी लिखी, स्वस्थ व सुंदर हो। और अगर सभी लड़कियों को नहीं पढ़ाएंगे तो पढ़ी-लिखी पत्नियाँ कहाँ से आएँगी। जरा सोचो, पढ़ी-लिखी लड़की शादी करके दूसरे घर चली भी गई तो क्या। वे जहाँ भी जाएँगी रोशनी फैलाएँगी। किसी और की पढ़ी-लिखी बेटी हमारे घर में बहू बनकर आएगी।

हमारी बेटियों का जीवन, लालन-पालन, पढ़ाई-लिखाई काफ़ी हद तक हम माँओं पर भी निर्भर करता है। हमारे परिवार में शांति व सुख रहे यह हमारे ऊपर बहुत निर्भर करता है। घर के हर सदस्य को उसकी ज़रूरत के हिसाब से पहनने खाने व पढ़ने के अवसर दिए जाएँ। अगर बेटी कमज़ोर, बीमार, अनपढ़ व मोहताज रहेगी तो परिवार पर ही उसका बोझ पड़ेगा। अक्लमंदी

तो इसी में है कि घर का हर सदस्य प्रतिभावान बने। दीदी क्या कोई माली चाहता है कि उसके पेड़ पर आधे फल अच्छे व आधे कच्चे रहें। क्या आप चाहती हैं कि आपके खेत की आधी फसल अच्छी और आधी खराब रहे। तो फिर यह भेदभाव बच्चों के साथ क्यों?

माँ ने कहा "रमा तुमने तो मेरी आँखें खोल दीं परन्तु नीलम तो बड़ी हो गई है" कोई बात नहीं तुम सिमी को तो भेजो। नीलम को नज़दीक के स्कूल में जो रात की क्लास होती है उसमें भेजो। अचानक ही मेरे मुँह से निकला वाह, क्या अच्छा दिन है।